Global Health & Education

TARANG Health Alliance

Lal PathLabs FOUNDATION

तरंग स्वास्थ्य समाचार

कौशल का कोई लिंग नहीं होता

लैंगिक समानता (Gender Equality) क्या है?

लैंगिक समानता का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी लिंग का हो, समान अधिकार, समान अवसर और समान जिम्मेदारियाँ मिलें। इसका मतलब है कि हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के समाज, शिक्षा, रोजगार और जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता के साथ आगे बढ़ सके। लैंगिक समानता तभी संभव है जब हम उन रूढ़िवादी सोच और सामाजिक बाधाओं को दूर करें जो लोगों को केवल उनके लिंग के आधार पर सीमित करती हैं।

लड़का हो या लड़की – पहचान हुनर से बने, जेंडर से नहीं।

हर बच्चा अलग है। करियर का चुनाव प्रतिभा के आधार पर हो, जेंडर के आधार पर नहीं।

लैंगिक समानता क्यों महत्वपूर्ण है?

1. सशक्तिकरण (Empowerment)
यह बच्चों को अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार शिक्षा और करियर चुनने की स्वतंत्रता देता है।

2. आर्थिक विकास (Economic Growth)
जब सभी लोगों को समान अवसर मिलते हैं, तो देश की उत्पादकता, नवाचार और विकास बढ़ता है।

3. सामाजिक न्याय (Social Justice)
समानता समाज में न्याय, सम्मान और सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में मदद करती है।

4. प्रेरणादायक आदर्श (Role Models)
समान अवसर मिलने से विभिन्न क्षेत्रों में सफल लोग उभरते हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनते हैं।

घर और स्कूल में लैंगिक समानता के संकेत

यदि घर और स्कूल में ये बातें दिखाई दें, तो यह लैंगिक समानता का अच्छा संकेत है—

1. घर के काम और निर्णयों में सभी की समान भागीदारी।
2. पढ़ाई और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में लड़के और लड़कियों को समान अवसर।
3. सभी बच्चों को अपनी भावनाएँ खुलकर व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।
4. बच्चों की व्यक्तिगत रुचियों का सम्मान करना, चाहे वे पारंपरिक सोच से अलग हों।
5. सभी बच्चों के योगदान का सम्मान और सराहना करना।

अभिभावक क्या कर सकते हैं?
(व्यवहार और करियर प्रोत्साहन)

• बेटियों और बेटों की शिक्षा को समान महत्व दें।
दोनों को समान संसाधन, पढ़ाई का समय और प्रोत्साहन दें।
• घर के काम सभी बच्चों में बाँटें।
इससे जीवन कौशल विकसित होते हैं और समानता की भावना बढ़ती है।
• बच्चों को बिना डर के अपने सपने पूरे करने दें।
उन्हें विश्वास दिलाएँ कि वे अपनी पसंद का कोई भी करियर चुन सकते हैं।
उदाहरण के लिए कहें—
"बेटा हो या बेटी , तुम जो बनना चाहो, बन सकते हो।"
• मेहनत और प्रयास की सराहना करें, लिंग की नहीं।
बच्चों की लगन, मेहनत और रचनात्मकता की प्रशंसा करें।
• घर में समानता का उदाहरण प्रस्तुत करें।
परिवार के सभी सदस्य जिम्मेदारियों और कामों को मिलकर बाँटें।

शिक्षक क्या कर सकते हैं?

शिक्षक बच्चों की सोच और व्यवहार को सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
• सभी विद्यार्थियों को समान अवसर दें।
उत्तर देने, चर्चा का नेतृत्व करने और परियोजनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर सभी को समान रूप से दें।
• लड़कियों को STEM विषयों के लिए प्रेरित करें।
विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित को सभी विद्यार्थियों के लिए रोचक और सुलभ बनाएं।
• लड़कों को कला और भावनाएँ व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
उन्हें अपनी भावनाएँ खुलकर व्यक्त करने और कला से जुड़ने का अवसर दें।
• जेंडर आधारित मज़ाक या छेड़छाड़ रोकें।
ऐसा सम्मानजनक और सुरक्षित कक्षा वातावरण बनाएं जहाँ हर विद्यार्थी स्वयं को मूल्यवान महसूस करे।

सभी के लिए प्रेरणादायक व्यक्तित्व

महिला एवं ट्रांसजेंडर प्रेरणास्रोत
Avani Chaturvedi – भारत की पहली महिला फाइटर पायलटों में से एक।
Ritu Karidhal – भारत के मंगल मिशन की प्रमुख वैज्ञानिक।
Kiran Bedi – भारतीय पुलिस सेवा (IPS) की पहली महिला अधिकारी।
Mithali Raj – भारत की महान महिला क्रिकेटरों में से एक और पूर्व कप्तान।
Kalki Subramaniam – सामाजिक कार्यकर्ता तथा तमिल फिल्म में अभिनय करने वाली पहली ट्रांसजेंडर महिला।
Gauri Sawant – सामाजिक कार्यकर्ता और भारत की पहली ट्रांसजेंडर महिला जिन्होंने एक बच्चे को गोद लिया।
इन सभी ने सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर यह सिद्ध किया कि **प्रतिभा और मेहनत का कोई लिंग नहीं होता।**

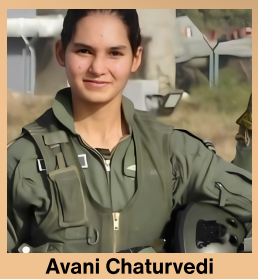
Avani Chaturvedi

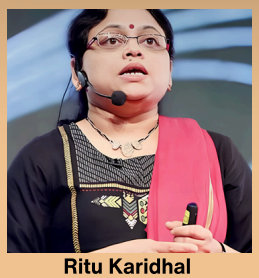
Ritu Karidhal

Dr. Kiran Bedi

Mithali Raj

Kalki Subramaniam

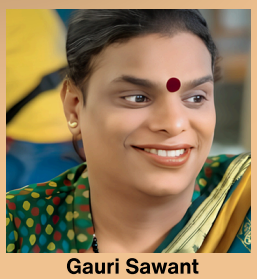
Gauri Sawant

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है : यदि आप चाहते हैं कि हम अगले न्यूज़लेटर में किसी विशेष विषय पर जानकारी दें, तो हमें ईमेल करें:
taranghealthalliance@gmail.com